भारत–बांग्लादेश राजनीतिक एवं आर्थिक सम्बन्धों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

(2014 से वर्तमान तक)

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टी्टयूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)
के अन्तर्गत पीएच०डी० (राजनीति विज्ञान) की
उपाधि हेतु प्रस्तावित
रूपरेखा

शोध निर्देशिका

डॉ० अंजू शर्मा (असिस्टेन्ट प्रोफेसर)
समाजशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान विभाग
समाज विज्ञान संकाय

शोधार्थिनी

सुमन यादव
(राजनीति विज्ञान)

समाजशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान विभाग, समाज विज्ञान संकाय
दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट, (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा – 282005
2020

i:Lrkouk%&

दक्षिण एशिया में भारत–बांग्लादेश के सम्बन्धों की शुरूआत 1971 से होती है। जब बांग्लादेश एक स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में विश्व में अस्तित्व में आया। दोनों देशों के मध्य बहु–आयामी सम्बन्ध तथा विभिन्न स्तरों के राजनीतिक क्रिया–कलापों के सम्बन्ध जुड़े हुए है। राष्ट्रहित की पूर्ति हेतु विभिन्न नीतियों जैसे आदान–प्रदान, यात्राऐं, बैठकों इत्यादि नियमित रूप से आयोजित होती रहती हैं। जिसके द्वारा दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय परियोजनायें जैसे बांग्लादेश में स्थित भारतीय मिशन योजना, वीजा व्यवस्था, छात्रवृत्ति योजना, स्वास्थ्य सम्बन्धित अस्पतालों की व्यवस्था, चिकित्सा इत्यादि विद्यमान है। भारत–बांग्लादेश वर्तमान में राजकीय स्तर पर महत्त्वपूर्ण बहुपक्षीय कार्य सम्पन्न हो रहे हैं और भविष्य के लिए मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध अग्रसर है।

पाकिस्तान मे पूर्वी पाकिस्तान के विरोध व विद्रोह के परिणाम स्वरूप पश्चिम पाकिस्तान के द्वारा पूर्वी पाकिस्तान में क्रान्ति उत्पन्न हो गयी, और पश्चिम पाकिस्तान ने जनरल टिक्का खान की सेना के द्वारा महिला, पुरुष आदि पर अत्याचार आरम्भ कर दिया। जिसके भय से अधिकतर बांग्लादेश के नागरिक भारत सीमा में प्रवेश कर गये, इस कारण भारत की आर्थिक स्थिति पर अधिक प्रभाव पड़ा। भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्द्रिरा गांधी पूर्वी पाकिस्तान के समर्थन हेतु पश्चिम पाकिस्तान के विरुध राजनीति निर्णय द्वारा 3 दिसम्बर 1971 को युद्ध आरम्भ कर दिया और बांग्लादेश की मुक्तवाहिनी सेना तथा भारतीय सैना के द्वारा 16 दिसम्बर 1971 ई. में पाकिस्तान को पराजित कर दक्षिण एशिया के नये राष्ट्र रूप में बांग्लादेश का उदय हुआ। आवामी लीग पार्टी के नेता शेख मुजिर्बुरहमान बांग्लादेश के प्रथम प्रधानमंत्री के रूप मे निर्वाचित हुए और बांग्लादेश निर्माण हेतु लोकतांत्रिक, समाजवादी राज्य, धर्मनिर्पेक्षता तथा भारतीय मैत्री नीति स्थापित की। 6–8 फरवरी 1972 में बांग्लादेश के प्रधानमंत्री शेख मुजिर्बुरहमान ने भारत यात्रा के दौरान भारत–बांग्लादेश के मध्य विश्व शान्ति तथा भविष्य के मैत्री सम्बन्धों को घनिष्ठता प्रदान की चेष्ठा व्यक्त की तथा दोनों देशों के मध्य सहयोगात्मक सम्बन्ध बने रहे।

मार्च 1972 में भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्द्रिरा गाँधी बांग्लादेश की यात्रा द्वारा भारत–बांग्लादेश के मध्य शान्ति, मित्रा, सहयोग तथा एक वर्ष में दो बार व्यापार, सुरक्षा, सांस्कृतिक,

योजना, विज्ञान, तकनीकी, आदि की व्यवस्था हेतु 25 वर्षीय सन्धि की गई तथा दोनों देशों के मध्य व्यापारिक संधि के तहत 100 करोड़ के व्यापार हेतु हस्ताक्षर किये। 5 जुलाई 1973 में भारत बांग्लादेश के मध्य दूसरे व्यापार समझौता के दौरान शिक्षा, व्यापार, सांस्कृतिक, खेल, विज्ञान आदि क्षेत्रों में सहयोगात्मक सम्बन्ध स्थापित हुए। 15 अगस्त 1975 में शेख मुजीर्बुरहमान की हत्या के उपरान्त बांग्लादेश में तानाशाह सरकार पार्टी की सत्ता के द्वारा बांग्लादेश में भारत विरोधी नीति अपनाई और भारत–बांग्लादेश सम्बन्धों के मध्य उतार–चढ़ाव और विवाद उत्पन्न जैसे–जल नदी विवाद, फरक्का बांध विवाद, सीमा विवाद, तीस्ता नदी विवाद, घुसपैठ की समस्या उत्पन्न हुयी। बांग्लादेश नेस्नलिस्ट के धार्मिक कट्टरवादी शासकों द्वारा लोकतन्त्र, धर्मनिर्पेक्षता तथा भारतीय मैत्री नीति का विरोध किया गया और मुजिर्बुरहमान तथा भारत सम्बन्धों पर विभिन्न आरोप लगाये गये जैसे– आवामी लीग पार्टी और भारत द्वारा बांग्लादेश के राष्ट्र हितो का पतन हो रहा है तथा भारत अपने राष्ट्रहित हेतु बांग्लादेश को हथियार सामग्री प्रदान करके बांग्लादेश को अन्य पड़ोसी राष्ट्रों के साथ सम्बन्ध स्थापित न करने के लिए वादित करता है। इस समय दोनों देशों के मध्य उतार–चढ़ाव के सम्बन्ध बने रहे। सन् 1996 में भारत व बांग्लादेश के सत्ता परिवर्तन के पश्चात् भारत के प्रधानमंत्री मोरा देसाई तथा बांग्लादेश की प्रथम प्रधानमंत्री शेख हसीना के द्वारा 14 दिसम्बर 1996 ई० गंगा नदी समझौता के तहत 50–50 प्रतिशत जल विभाजन हेतु 30 वर्षीय सन्धि की और दोनों देशों के मध्य मैत्री सम्बन्धों के निरन्तर प्रयास किये गये। बांग्लादेश सत्ता के परिवर्तन होने पर बांग्लादेश नेस्नलिस्ट पार्टी की जिया खालिदा के सत्ता में आने के पश्चात् भारतीय विरुद्ध नीति अपनायी गयी और चीन, पाकिस्तान के मध्य मैत्री सम्बन्धों पर बल दिया। इस कार्य काल के पश्चात दोनों देशों के मध्य नकारात्मक सम्बन्ध स्थापित हुए। 29 दिसम्बर 2008 में बांग्लादेश में आवामी लीग पार्टी की सत्ता के द्वारा बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना लोकतांत्रिक विचारधारा और भारत के प्रति मैत्री सम्बन्धों को सकारात्मकता दृष्टि के नये आयामों की शुरूआत प्रारम्भ की। 9 फरवरी 2009 को भारत के विदेश मंत्री श्री प्रणव मुखर्जी की ढाका राजकीय यात्रा के दौरान दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय सम्बन्धों को मधुर बनाने हेतु सकारात्मक विचार धारा प्रदान की गयी। 12 फरवरी 2010 में बांग्लादेश की प्रधानमंत्री श्रीमती शेख हसीना की भारत यात्रा के दौरान भारतीय राष्ट्रीय भवन में 2009 के लिए इन्द्रिरा गाँधी पुरस्कार शान्ति, निशस्त्रीकरण के लिए शेख हसीना

को सम्मानित किया गया और भारत बांग्लादेश के मध्य सम्बन्ध हेतु मुख्य तीन समझौते हुये जैसे– संगठित अपराध, गैरकानूनी दवाई की तस्करी पर रोक, अपराधिक मामलों में कानूनी सहायता की सहमति व्यक्त की गयी। 25 मार्च 2013 में राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी की राष्ट्रपति पद की पहली बांग्लादेश यात्रा के तहत दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय सम्बन्ध तथा विभिन्न पहल जैसें रेल मार्ग, सड़क निर्माण बस संचालन, जल मार्ग आदि परियोजनाओं हेतु 800 मिलियन अमेरिकी डॉलर प्रदान किये गये तथा ऐतिहासिक मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों के तहत वर्तमान में मैत्री सम्बन्धों को घनिष्टता हेतु निरन्तर प्रयास किये। 13 मार्च 2014 में केन्द्र की नयी सरकार भारतीय जनता पार्टी के पूर्ण बहुमत 272 सीटे के माध्यम से भारत के 14 वें प्रधानमंत्री के रूप में नरेन्द्र मोदी ने 26 मई 2014 को राष्ट्रपति भवन में आयोजित शपथ समारोह में भारत के पडोसी राष्ट्रों के अध्यक्ष जैसे– अफगानिस्तान के राष्ट्रपति हामिद करज़ई, भूटान के प्रधानमंत्री शेंरिग ताबगे, मोरिशस के प्रधानमन्त्री नवीन चन्द्र रामगुलाम, नेपाल के प्रधानमंत्री सुशील कोहराला तथा बांग्लादेश की सांसद अध्यक्ष शर्मीन चौधरी आदि राष्ट्र अध्यक्ष के समक्ष सपथ ग्रहण के दौरान पडोसी देशों के मध्य मैत्री सम्बन्धों का दावा किया गया। 6–7 जून 2015 में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की बांग्लादेश यात्रा के दौरान बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना के मध्य 44 वर्ष पूर्व सीमा विवाद समाधान हेतु 1974 को भारत की प्रधानमंत्री इन्द्रिरा गाँधी तथा बांग्लादेश के प्रधानमंत्री शेख मुजीर्वुरहमान के मध्य सीमा समझौते के दस्तावेज और 2011 के भारत के पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह एवं बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना के मध्य सीमा समझौते के प्रोटोकॉल से सम्बन्धित दस्तावेज का आदान प्रदान किया गया। जिसके तहत भारत को 51 क्षेत्र दिये गये तथा बांग्लादेश को 111 क्षेत्रों पर आपसी समझौता किया। 6–7 अप्रैल 2017 में बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना की भारत यात्रा के दौरान भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मध्य द्विपक्षीय सम्बन्धों को परस्पर सकारात्मकता प्रदान हेतु 22 समझौते हुए जैसे– व्यापारिक, औद्योगिक, परिवहन, निवेश, सुरक्षा, चिकित्सा, विद्युत ऊर्जा उत्पाद आदि किये गये। 30 दिसम्बर 2018 के बांग्लादेश के 11वें संसदीय चुनाव में बांग्लादेश की आवामी लीग पार्टी ने 300 सीट में से 260 सीटों पर सत्ता स्थापित की है। 2019 के भारतीय आम चुनाव के परिणाम स्वरूप भारत के 15 वे प्रधानमंत्री के रूप में नरेन्द्र मोदी ने शपथ समारोह में पडोसी राष्ट्रों जैसे श्रीलंका, बांग्लादेश, म्यामार, किर्गिज़स्तान आदि देशों के राष्ट्रपति

उपस्थित रहे और भारत के मध्य द्विपक्षीय सम्बन्ध हेतु पड़ोसी राष्ट्रों की सकारात्मकता द्वारा मैत्री सम्बन्ध स्थापित करने की चेष्टा व्यक्त की गयी। 8 फरवरी 2019 में संयुक्त सलहाकार आयोग की पाँचवी बैठक हुई जिसमें भारत की विदेश मंत्री सुषमा स्वराज व बांग्लादेश के विदेश मंत्री अब्दुल मोमेन के मध्य पारस्परिक राष्ट्र हित हेतु द्विपक्षीय मुद्दों एवं भविष्य में वहुपक्षीय सहयोगों को सुदृढ़ करने के लिए सहमति व्यक्त की गई। 9 अगस्त 2019 को नई दिल्ली में आयोजित 8वीं गृहमंत्री की बैठक द्वारा भारत के गृहमंत्री अमित शाह तथा बांग्लादेश के गृहमंत्री असदुज्जमा खान के मध्य द्विपक्षीय सम्बन्धों की महत्वपूर्णता एवं सुरक्षा और सीमा प्रबन्धों के प्रयासों को अधिक प्रगति के लिए सहमति दी गई।

उल्लेखनीय है कि भारत बांग्लादेश सम्बन्ध वर्तमान में मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध व सहयोगात्मक नीतियों द्वारा आपसी राष्ट्र हित हेतु सकारात्मक विचारधारा अपनाये हुए है। जिसके माध्यम से दोनों देशो के अन्तर्गत परिप्रेक्ष्य सुनिश्चित तथा महत्वपूर्ण है। भारत की केन्द्र सरकार का मैत्री व्यवहार और बांग्लादेश के लोकतांत्रिक विचारधारा के द्वारा भारत बांग्लादेश सम्बन्धों में सकारात्मकता विद्यमान है।

l)kfUrd :Ikj[kk &

किसी भी राष्ट्र की विदेश नीति उसके कुछ सिद्धान्तों राष्ट्रहितों एवं उद्देश्यों का समूह होता है जिसके द्वारा वह दूसरे राष्ट्रों के मध्य सम्बन्ध स्थापित करके उन सिद्धान्तों की पूर्ति हेतू कार्यरत होता रहता है। मॉडलस्की ने अपनी पुस्तक “A Theory of Forign Policy” (1962) 'विदेश नीति समुदायों द्वारा विकसित उन क्रियाओं की व्यवस्था है, जिनके द्वारा एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों के व्यवहार को बदलने तथा अपनी गतिविधियों को अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण में ढालने की कोशिश करता है।' फेलिक्स के अनुसार, “A Theory of Forign Policy” (1962) में पारिभाषित किया है कि 'विदेश समुदायों द्वारा विकसित इन क्रियाओं की व्यवस्था है जो एक दूसरे राष्ट्र के साथ व्यवहार को बदलने तथा अपनी गतिविधियों को अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण में ढालने का प्रयास करता है।' भारत की विदेश नीति को समझने के लिए सर्वप्रथम सिद्धान्तों को समझना महत्त्वपूर्ण है। विदेश नीति को सिद्धान्त के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का वास्तविकता का बोध होता है। यथार्थवाद अन्तर्राष्ट्रीय का महत्त्वपूर्ण उपागम है। यथार्थवाद का परिचय अनेक यथार्थवादी सिद्धान्तों ने अपने ग्रन्थों के अनुसार प्रस्तुत किया है– जैसे कौटिल्य का मण्डल सिद्धान्त

'अर्थशास्त्र' (4th Century BC) यथार्थता पर आधारित है। यथार्थवादी सिद्धान्त मॉर्गेनथाऊ ने अपने ग्रन्थ "Politics Among Nations" (1948) में राजनीति शक्ति के लिए संघर्ष करती है। शक्ति के द्वारा राष्ट्र अपने क्षेत्र की अभिवृद्धि करते हैं। हॉब्स ने अपनी पुस्तक 'Leviathan' (1951) में बताया है कि राज्य की प्रकृति युद्ध के प्रति उन्मुख होती है। निकोल मैक्यिावली की पुस्तक ''The Prince" (1532) यथार्थता पर आधारित है। ई०एच० कार ने "The Twenty Years Crisis" (1939) में यथार्थवाद को कल्पनावादी समाज के विरुद्ध स्थान दिया है। फुकूयामा के अनुसार, अपनी पुस्तक "The End of History and Last Man (1992)" 'घरेलू राजनीति व्यवस्था अतः अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष को समाप्त कर देगी तथा राष्ट्रों की आन्तरिक संरचना, संघर्ष की समाप्ति का विश्वास होगा। भारत की विदेश नीति के उद्देश्यों भारत के संविधान के चतुर्थ भाग के अनुच्छेद 51 में सम्मिलित है। भारत की विदेश नीति गुटनिरपेक्षता तथा पंचशील पर आधारित है। गुटनिरपेक्षता की नीति का मुख्य उद्देश्य स्वतंत्र देश का निर्वाह करना तथा संघर्ष की समस्याओं को कम करके अन्तर्राष्ट्रीय में शान्ति स्थापित करना है। पंचशील सिद्धान्त के पाँच मुख्य सिद्धान्तों का उद्देश्य है कि एक–दूसरे राज्य की भू–क्षेत्रिय अखण्डता तथा सप्रभुता का समान, अनाक्रमण, अहस्तक्षेप तथा शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व है। प्रत्येक राष्ट्र की विदेश नीति किसी न किसी सिद्धान्त पर आधारित होती है। माइकल निकल्सन के अनुसार, 'यदि युद्ध यथार्थवाद का परिणाम है तो स्पष्ट रूप से यह विनाशकारी सिद्धान्त है।' सीन लिन–जोन्स तथा स्टीवन ई. मिलर का तर्क है कि यथार्थवाद के– (क) अक्रामक यथार्थवाद का प्राथमिक ध्यान सुरक्षा पर केन्द्रित है और इसमें आक्रामक सैन्य गतिविधियाँ बढ़ाई जाती है और अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धता को प्रोत्साहन किया जाता है। (ख) रक्षात्मक में अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में अनंत सुरक्षा एवं रक्षात्मक रणनीति पर महत्त्वपूर्ण बल दिया जाता है। नवयथार्थवाद विद्वान कैनेथ वाल्ज ने अपनी पुस्तक "Theory of International Politics" (1939) में कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति प्रभावी शक्तियों का निहित स्वार्थ है जो राष्ट्र–राज्य अपने क्षेत्रीय सीमाओं का तथा आर्थिक शक्ति का विस्तार करना चाहते हैं उसके लिए वैश्विक समांजस्य के रूप में प्रवेश करते हैं। मॉर्गेनथाऊ के अनुसार, 'राजनेताओं को राष्ट्रहित के लिए विदेश नीति के दिशा निर्देश का पालन उनका दायित्व होता है।' स्कॉट वर्चिल के अनुसार, 'अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को अलग प्रभाव क्षेत्र के रूप में देखना पसन्द करता है जो सभी राज्यों के व्यवहारों में अनुकूलित करता है।' उदारवाद का मुख्य बिन्दु

स्वतन्त्रता, सहयोग, शांति, प्रगति पर बल देता है। प्रसिद्ध उदारवादी इमैन्युल के अनुसार, 'शक्ति को स्थापित करने के लिए व्यक्तिगत चेतना में बदलाव तथा गणतंत्रात्मक संविधान की आवश्यकता है। राज्य के मध्य संघीय समझौते युद्ध का विनाश कर सकते हैं, ये संघ अधिराज्य वैश्विक सरकार के एक स्थायी शक्ति का समर्थन करने वाले हो सकते हैं।' उदारवाद एक नैतिक तर्क पर आधारित है जो व्यक्ति के स्वतंत्रता और सम्पत्ति के अधिकारों को सुनिश्चित करना सरकार का सर्वोच्च लक्ष्य है। स्कॉट वर्चिल के अनुसार, 'उदारवाद का सभी आधुनिक औद्योगिक समाज को गढ़ने में एक गहरा प्रभाव डालता है।' स्टेनली हॉकमैन के अनुसार, 'उदारवाद का स्पष्ट आत्मसंयम, मितव्ययिता, समझौता और शान्ति है तथा उदारवाद विवेक, शान्ति से पहचाना जाता है। यथार्थवाद समझारी और युद्ध पर बल देता है।' डेविड बाल्यर्वन के अनुसार, 'उदारवाद की चार चरन बताये हैं जैसे– वाणिज्यक, गणतंत्रात्मक, समाजशास्त्रीय और उदारवादी संस्थागतवाद जो समकालीन अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को प्रभावित करती है। नव उदारवाद संस्थागतवाद सिद्धान्त नव यथार्थवाद की धारणाओं को साझा करता है। लेकिन नव–उदारवादी विद्वान नव यथार्थवाद को अत्यधिक संघर्ष और प्रतिस्पर्धा पर बल देते हैं। नव उदारवादियों का मत है कि शान्ति और न्याय कोई नैसर्गिक शर्तें नही है इसके लिए अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं को अधिक लोकतांत्रिक बनाने की जरूरत है। उदारवाद वैश्विक संरचना पर ध्यान केन्द्रत करता है तथा उदारवाद मानव स्वतन्त्रता, जीवन, सम्पत्ति की सुरक्षा विश्व शान्ति का आधार मानता है। सभी उपागम से अन्तर्राष्ट्रीय विदेश नीति प्रभावित होती है। वर्तमान में भारत की विदेश नीति राष्ट्रहित, सुरक्षा, पड़ोसी देशों के मध्य मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध व सहयोग की नीति अपनायी जाती है। भारत में वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की विदेश नीति स्वयं में शान्ति, राष्ट्रीय हित, सुरक्षा मैत्री सम्बन्ध आदि सहयोगपूर्ण नीति को भविष्य में अग्रसर कर रहे हैं।

lkfgR; iqukoyksdu

Mohammad (2002) – प्रस्तुत लेख के अन्तर्गत लेखक द्वारा बांग्लादेश के व्यापार उत्पादन के विकास जैसे कपड़ों के क्षेत्र मे वृद्धि, घरेलू उत्पाद का विकास, निर्मित माल सप्लाई में वृद्धि तथा असुरक्षा का उल्लेख किया गया है। लेखक का मानना है कि बांग्लादेश के निर्माण हेतु विभिन्न आयामों जैसे रक्षा

सम्बन्धी नीतियाँ, संस्थानों में सुधार, रोजगार मे वृद्धि, गरीबी कम करने के लिए आर्थिक विकास, औधोगिक सम्बन्ध में सुधार, श्रमिक महिलाओं के लिए उत्पादकता में सुधार, सामाजिक सुरक्षा आदि का वर्णन किया गया है। अन्त में कहा जा सकता है कि बांग्लादेश के निरन्तर विकास के तहत पडोसी राष्ट्रों के मध्य मैत्री सम्बन्ध होने से वैश्विक अर्थ व्यवस्था में शक्तिशाली राष्ट्र को सहयोग कर रहें हैं, जिसमें भविष्य मे बांग्लादेश अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना योगदान कर सकेगा।

Pattanaik (2005) - प्रस्तुत लेख के अन्तर्गत लेखक द्वारा भारत बांग्लादेश के मध्य आर्थिक सम्बन्ध, बहुआयामी राजनीतिक सम्बन्धों का उल्लेखनीय वर्णन किया गया है। लेखक के अनुसार भारत के द्वारा बांग्लादेश के निर्माण हेतु महत्वपुर्ण योगदान दिया है तथा बांग्लादेश की विदेश नीति को एक विशिष्ट आकार प्रदान किया है जिसके पश्चात् ढाका के राजनीतिक संगठन जैसे बांग्लादेश नेस्नलिस्ट पार्टी भारत–बांग्लादेश के मैत्री सम्बन्ध को एक संदेह की दृष्टि से देखते है, जिसके कारण भारत–बांग्लादेश के सम्बन्ध में मत भेद बने हुए हैं। अन्त में कहा गया है कि भारत–बांग्लादेश के सम्बन्धों मे विभिन्न क्षेत्रों आदि हेतु सहयोग पूर्ण नीति के माध्यम से भविष्य में मैत्री सम्बन्ध स्थापित हो सकेंगे।

Farooq suphah (2008) - प्रस्तुत पुस्तक के अन्तर्गत लेखक द्वारा बांग्लादेश मे बढ़ते आतंकवाद के खण्ड़न तथा आतंकवाद रोकने के लिए सैन्य सुरक्षा, कार्य व्यवस्था में सुधार, जनमत का एकीकरण, लोकतंत्र की भावना आदि रणनीतियों का वर्णन किया गया है। लेखक के अनुसार– बांग्लादेश मे कट्टरवादी विचारधारा के द्वारा आतंकवाद का अत्याधिक विस्तार होता जा रहा है। जसमे इस्लामिक कट्टरवाद तथा गैर इस्लामिक कट्टरवाद और बांगलादेश की राजनीतिक कट्टरवादी संगठन के द्वारा आतंवादी संगठनों की वित्तीय पोषण का समर्थन प्रदान किया जा रहा है– इस कारण आतंकी उद्देश्यों के समर्थन करने मे बांग्लादेश मे आतंकवादी गतिविधियाँ बढ़ती जा रही है। अंत में कहा जा सकता है कि आतंकवाद की रोकथाम हेतु बांग्लादेश सरकार आतंवादी संगठनों के लिए कार्यवाही तथा घुसपैठ जैसी समस्यओं के समाधान के लिए और सुरक्षा में सुधार कर रही है, जिससे आतंकवाद की समाप्ति के माध्यम से पड़ोसी राष्ट्रों के साथ सुरक्षा सम्बन्धों मे घनिष्ठता आ सकेगी।

Chaudhary (2009) - प्रस्तुत लेख के अन्तर्गत लेखक ने दक्षिण एशियायी राष्ट्रों के मध्य ऐतिहासिक, सांस्कृतिक आदि सम्बन्धों तथा भारत–बांग्लादेश सम्बन्धों का उल्लेखनीय वर्णन किया गया है। लेखक का तर्क है कि, भारत पडोसी राष्ट्रों के प्रति मैत्रीपूर्ण नीति अपनाता है जैसे भारत बांगलादेश के मध्य मैत्रीपूर्ण नीति एवं सकारात्मक विचार धारा हेतु प्रयास किए जा रहें हैं, जिसके फलस्वरूप दोनों देशों के द्विपक्षीय सम्बन्ध पूर्ण रूप से लाभकारी बनेंगे। अन्त में कहा जा सकता है कि आर्थिक व्यवस्था के सुधार हेतु व्यापार के लिए भारत बांग्लादेश नए आयामों की खोज करेगें, जिसके परिणाम स्वरूप भारत बांग्लादेश के द्विपक्षीय सम्बन्ध घनिष्ट व सुदृण हो सकेंगे।

Datt (2010) - प्रस्तुत लेख के अन्तर्गत लेखक द्वारा भारत–बांग्लादेश के द्विपक्षीय सम्बन्धों में व्यापारिक सम्बन्ध, आर्थिक सम्बन्ध, आतंकवाद तथा चुनौतियों का विस्तृत वर्णन किया गया है। लेखक के अनुसार भारत व बांग्लादेश 1971 ई. मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित है, दोनों देशों के मध्य 4094 किमी० सीमा जुड़ी है, एवं बांग्लादेश तीन ओर से भारतीय राज्यों से घिरा हुआ है, जिसमें दोनो देशों के मध्य नकारात्मक सम्बन्ध होने के निम्न विवादों जैसे सीमा विवाद, जल विवाद, आतंकवाद, शरणार्थी आदि समस्याएँ हैं। लेखक द्वारा दोनों देशों के आर्थिक सम्बन्धों के मध्य हानि तथा लाभों का उल्लेखनीय वर्णन किया गया है। अन्त में कहा जा सकता है कि भारत बांग्लादेश के मध्य द्विपक्षीय सम्बन्धों के सकारात्मक प्रभाव के उपरान्त भी एक दूसरे के मध्य समस्या तथा चुनौतियां विद्यमान हैं, किन्तु भविष्य में भारत बांग्लादेश के द्वारा नए आयामों से पूर्व समाधान हेतु प्रयास किए जा रहें हैं जिसके माध्यम से दोनों के मध्य सम्बन्ध मधुर बन सकेगें।

Devid (2012) - प्रस्तुत पुस्तक के अन्तर्गत बांग्लादेश के ऐतिहासि, आर्थिक, राजनीतिक सामाजिक परिवर्तनों के माध्यम से अतीत पर प्रकाश डाला गया है। लेखक के अनुसार– पाकिस्तान से कठिन सफलता के बाद बांग्लादेश स्वतंत्र राष्ट्र हेतु संसदीय लोकतंत्र के रूप में उभरा पिछले बीस वर्षां में बांग्लादेश कठिन परिश्रम हेतु अन्तराष्ट्रीय समुदाय मे रुचि दिखा रहा है। अन्त में कहा जा सकता है कि बांग्लादेश पडोसी राष्ट्रों के प्रति मैत्रीपूर्ण तथा सहयोगात्मक सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास कर रहा है।

Chouhan (2012) - प्रस्तुत लेख के अन्तर्गत लेखक ने बांग्लादेश की विदेश नीति, विदेश नीति के निर्धारक तत्व एवं बांग्लादेश के पडोसी राष्ट्रों के मध्च जैसे– चीन, भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका, पाकिस्तान सम्बन्धों आदि का उल्लेख किया गया है। लेखक के अनुसार– अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बांग्लादेश की परिवर्तनीय प्रक्रिया का पता लगाने का प्रयास किया गया है तथा अधिक शक्तिशाली एवं विकसित राष्ट्रों के साथ व्यापारिक सम्बन्धों के तहत उभरती अर्थ व्यवस्था का वर्णन किया गया है अंत में कहा जा सकता है कि बांग्लोदश द्वारा पडोसी राष्ट्रों के साथ मैत्री पूर्ण सम्बन्ध बनने हेतु निरन्तर प्रयास किये गये हैं। जिसके उपरान्त बांग्लादेश की अर्थव्यवस्था मे पडोसी देश सहायता प्रदान कर ने हेतु तत्पर हो सकें।

Pant (2015) - प्रस्तुत लेख के अन्तर्गत लेखक द्वारा भारत–बांग्लादेश सम्बन्ध तथा भारत के पडोसी राष्ट्र एवं अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भारत की विदेश नीति के महत्त्व का वर्णन किया गया है। लेखक के अनुसार ऐतिहासिक काल मे भारत व बांग्लादेश के मध्य सम्बन्ध सकारात्मक के रहे परन्तु तानाशाह सरकार की धार्मिक कट्टरवादी विचार धारा के कारण दोनों देशों के सम्बन्धों में तनाव तथा उतार–चढ़ाव के माध्यम नकारात्मक के स्वरूप का प्रभाव पड़ा है। अन्त में कहा जा सकता है कि वर्तमान में बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना भारतीय केन्द्र सरकार ने घनिष्ट व मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों के लिए निम्न प्रयास जैसे रेलमार्ग, सड़कों के निर्माण, जलमार्ग, व्यापार संम्बन्धित आदि परियोजना आरम्भ की गयी है जिसके कल स्वरूप भारत बांग्लादेश के मध्य द्विपक्षीय सम्बन्ध मधुर बनेगें और भविष्य के लिए निम्न आयामों की खोज कर सकेगें।

Kllieans (2016) - प्रस्तुत पुस्तक के अन्तर्गत लेखक द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय समाज का विस्तार राष्ट्रवाद अन्तर्राष्ट्रीय कानून, आदि का उल्लेख किया गया है। लेखक के अनुसार– इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत– बांग्लादेश के मध्य सम्बन्ध एवं अन्तराष्ट्रीय के राष्ट्रों के सम्बन्धों को इतिहास पर आधारित माना है। अतः कहा जा सकता है कि अन्राष्ट्रीय स्तर पर प्रत्येक राष्ट्र अपने राष्ट्र हित की पूर्ती हेतु पड़ोसी राष्ट्रों पर आश्रित एवं मैत्री सम्बन्ध स्थापित करने की चेष्ठा करते है। जिसके द्वारा अविकसित राष्ट्र विकसित देशों के साथ भविष्य मे मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बना सकेगें।

Hada (2016) - प्रस्तुत लेख के द्वारा लेखक ने भारत–बांग्लादेश के मध्य जल विवादों में ऐतिहासिक रूझान का उपयोग करते हुए तर्क दिया है कि अगर बांग्लादेश की सहकारी सुरक्षा के कोण से ट्रैस बाउंड़री बराक नदी पर प्रस्तावित टीपिमुख बांध विचार करने के फलस्वरूप दोनों देश महत्त्वपूर्ण जल विलयन करने में सफल हो सकेगें और समप्रभुता पर आधारित दृष्टिकोण जो दक्षिण एशिया में जल सम्बन्धित मुद्दों के समाधान की एक प्रचलित विशेषता रही है। इन संसाधनों की परियोजनाओं को साझा करने के पश्चात् दोनों देशों को लाभ प्राप्त हो सकेगें और दक्षिण में नदियों के वहुपक्षीय सहयोग के लिए महत्पूर्ण परियोजनाओं के परिणाम से लाभ प्राप्त हो सकेंगें। अतः कहा जा सकता है कि नदियों के सहयोग हेतु आपसी नीति के तहत दक्षिण एशिया के बहुपक्षीय सहयोग द्वारा भविष्य में मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित हो सकेगें।

Balaji (2016) - प्रस्तुत लेख के अन्तर्गत भारत व बांग्लादेश के मध्य सम्बन्धों रेल मार्ग यातायात व्यवस्था, पुल निर्माण सहयोग, तकनीकी, अनुदान सहायता, आर्थिक व्यापारिक सम्बन्धों का उल्लेख किया गया है। लेखक का मानना है कि वर्तमान पन्द्रह वर्षों में बांग्लादेश को भारत द्वारा विकास निर्माण हेतु 700 मिलियन डॉलर की धनराशि प्रदान की जाती रही है, जैसे 2011 में भारत के प्रधानमंत्री ड़ॉ० मनमोहन सिंह बांग्लादेश यात्रा के दौरान एक मिलियन डॉलर अनुदान के रूप में तथा वर्ष 2015 में नरेन्द्र मोदी की बांग्लादेश यात्रा के दौरान दो मिलियन धनराशि प्रदान की गई है, जिसके माध्यम से दोनों देशों के मध्य द्विपदीय संम्बन्धों में घनिष्ठता परिलक्षित होती है। अंत में कहा जा सकता है कि भारत–बांग्लादेश के मध्य आपसी सहयोग स्पष्ट है, जिसके द्वारा सुरक्षा सम्बन्धित सहयोग, बुनियादी ढ़ाँचे हेतु दोनों देश मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध में घनिष्ठता प्रदान कर सकेगें।

Keshama (2016) - प्रस्तुत लेख के अन्तर्गत लेखक ने भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की विदेश नीति तथा भारत–बांग्लादेश सम्बन्धों की परिक्षण का उल्लेखनीय वर्णन किया है। लेखक के अनुसार भारत की भारतीय जनता पार्टी तथा बांग्लादेश की आवामी लीग पार्टी की शासन सत्ता होने के पश्चात् भारत–बांग्लादेश के मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध घनिष्ठ बनाने का कार्य न करके जल समस्या, घरेलू राजनीति की गतिशील द्वारा भारत–बांग्लादेश के मध्य सम्बन्धों को नकारात्मक बनाने में प्रमुख चुनौतियों के रूप में

कार्य करती है जिसके कारण भारत व बांग्लादेश सम्बन्ध उतार–चढ़ाव बने हुए हैं। अन्त में कहा जा सकता है कि भारत–बांग्लादेश के सम्बन्धों में निम्न मैत्री सम्बन्धो की सम्भावनायें हैं, जिन्हें खोजने की और दोहराने की आवश्यकता है, जिसे दोनों देशों की आपसी समझ और पारस्परिकता के आधार पर द्विपक्षीय सम्बन्धों हेतु भारत–बांग्लादेश के लिए अधिक महत्वपूर्ण हो सकते हैं।

Dubey (2016) - प्रस्तुत पुस्तक के अन्तर्गत लेखक द्वारा भारत बांग्लादेश के मध्य आर्थिक सम्बन्धों का उल्लेखनीय वर्णन किया गया है। लेखक के अनुसार, दोनों देशों के मध्य आर्थिक गतिविधियाँ महत्त्वपूर्ण है जिसके अन्तर्गत व्यापार लाभ, ऋण व्यवस्था, संयुक्त उद्यगम, परगमन जैसे परिवाहन योजनायें आदि के माध्यम से दक्षिण एशिया, दक्षिण–पूर्व एशिया तथा पूर्वी एशिया के अन्य देशों के मध्य आर्थिक सम्बन्ध हेतु महत्वपूर्ण है। भारत के व्यापार वृद्धि हेतु सार्क के राष्ट्रों में बांग्लादेश सबसे महत्त्वपूर्ण देश है। इस पुस्तक में दोनों देशों के मध्य व्यापारिक लाभ के उतार–चढ़ाव का वर्णन किया गया है। अन्त में कहा जा सकता है कि भारत बांग्लादेश के राजनीतिक नेतृत्व के सहयोग एवं सकारात्मकता के माध्यम से आर्थिक सम्बन्ध मजबूत बनाने हेतु भविष्य में व्यापारिक लाभ प्राप्त हो सकेंगे।

Banrjee (2017) - प्रस्तुत लेख के अन्तर्गत लेखक द्वारा भारत व बांग्लादेश के मध्य सम्बन्धों के ऐतिहासिक, सीमा विवाद तथा वर्तमान में हुए सीमा समझौते की पृष्ठ भूमि का विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है। लेखक के अनुसार बांग्लादेश के मध्य सीमान्त विवाद अधिक चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है। वर्तमान मे 2015 के सीमा समझौते के पश्चात् दोनों देशों के मध्य तीस्ता विवाद तथा घुसपैठ समस्याँ बनी हुई है लेखक का कहना है कि ऐतिहासिक पूर्व 1972 में हुए सीमा समझौते को भारत पुष्टी नही करता और 2015 के सीमा समझौते द्वारा सीमा विवाद की समस्या नहीं कहा जा सकता क्योंकि भारत बांग्लादेश के मध्य हुए सीमा बंटवारे के तहत बांग्लादेश के मध्य हुए सीमा बंटवारे के तहत बांग्लादेश को 111 क्षेत्र तथा भारत के 51 क्षेत्र पर समझौता पूर्ण किया गया है। इस कारण सीमा समस्या वर्तमान में निहित है। अन्त में कहा जा सकता है कि भारत–बांग्लादेश के मध्य सीमा समस्या हेतु समाधान नहीं है किन्तु भविष्य में राजनीतिक नेता के माध्यम से सीमा समाधान की आशंका व्यक्त की जा सकती है।

Mohan (2017) - प्रस्तुत पुस्तक के अन्तर्गत लेखक द्वारा भारतीय विदेश नीति तथा भारत–बांग्लादेश सम्बन्धों का अध्ययन किया गया है। लेखक के अनुसार– भारतीय विदेश नीति का मुख्य लक्ष्य अपने पडोसी राष्ट्रों के मध्य मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित तथा राष्ट्र हित की पूर्ति को प्राप्त करना। पिछले एक दशक से भारत की आर्थिक वृद्धि और राजनीतिक स्थिरता के माध्यम से पड़ोसी राष्ट्रों का अधिक आत्मविश्वास प्राप्त किया है जिससे बांग्लोदश भारत की आर्थिक स्थिति का लाभ प्राप्त करने हेतु भारत के मध्य प्रोत्साहित हो रहा है। अतः कहा जा सकता है कि बांग्लादेश को भारत के समक्ष सकारात्मकता तथा अन्य राष्ट्र जैसे चीन, पाकिस्तान के षणयंत्र योजनाओं के विरोध कर के भारतीय सुरक्षा की चनौतियाँ का समाधान प्रदान करेगा। जिससे भारत बांग्लादेश सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण बनेगे।

Kumar (2017) - प्रस्तुत लेख के अन्तर्गत लेखक ने भारत व बांग्लादेश के वर्तमान सम्बन्धों का विस्तृत वर्णन किया गया है लेखक ने अपने विचार व्यक्त करते हुए भारत–बांग्लादेश के विवाद जैसे तीस्ता नदी विवद, शरणार्थी विवाद, आतंकवादी समस्यओं जैसे विवादित मुद्दे हैं बांग्लादेश की आवामी लीग पार्टी भारत के प्रति सकारात्मक विचारधारा के माध्यम से दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों ने विवादों के समाधान हेतु नये नीतियों का आरम्भ कर रहे हैं। अतः कहा जा सकता है कि भारतीय सुरक्षा हेतु भारत–बांग्लोदश के प्रति सकारात्मकता व्यवहार आवश्यक है क्योंकि बांग्लादेश के सहयोग के मध्य में भारत की गतिविधियाँ आतंकवादी खतरों से सुरक्षा अति आवश्यक है तत्पश्चात दोनों देशों के मध्य भविष्य मे मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध घनिष्ट हो सकेगें।

Javed (2017) - प्रस्तुत लेख के अन्तर्गत लेखक द्वारा भारत व बांग्लादेश के ऐतिहासिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा भाषायी दृष्टि तथा पारस्परिक समानताओं का वर्णन किया गया है। लेखक के अनुसार भारत ने बांग्लादेश के जन्म के उपरान्त से ही मैत्री नीति तथा सकारात्मक विचार प्रकट किये हैं। दोनों देशों के मध्य 54 जल नदियाँ तथा बांग्लादेश भारतीय राज्य पश्मिम बंगाल, मेघालय, आसाम, त्रिपुरा तीन दिशाओं से सीमा साझा करता है। तत्पश्चात् दोनों देशों के मध्य ऐतिहासिक विवादित मुद्दे सीमा विवाद, जल नदी विवाद, फरक्का बाँध समस्या, शरणार्थी समस्या तथा तीस्ता नदी विवाद आदि का अध्ययन किया गया है। अतः कहा जा सकता है कि भारत बांग्लादेश के राजनीतिक नेतृत्व के

समाजस्यता हेतु विवेकपूर्ण नीतियों के द्वारा विवादों के समाधान के द्वारा भविष्य में मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बन सकेगें।

Siddigi (2018) - प्रस्तुत लेख के अन्तर्गत लेखक ने सांस्कृतिक, साहित्यिक व धर्मनिरपेक्षता की दृष्टि से भारत–बांगलादेश के मध्य पारस्परिक समानताओं व मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का वर्णन किया गया है। लेखक के अनुसार– भारत–बांगलादेश के मध्य 42 वर्ष पूर्व के विवाद को 6–7 जून 2015 को भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की बांग्लादेश यात्रा के दौरान बांगलादेश के प्रधानमंत्री शेख हसीना सम्पन्न किया गया तथा अन्य द्विपक्षीय सम्बन्ध तथा परमाणु ऊर्जा, आंतरिक सुरक्षा सम्बन्धी बिजली, जल, आतंकवाद, प्रत्यार्पण सन्धि तथा नशीले पदार्थों की तस्करी इत्यादि का वर्णन किया है। अन्त में कहा जा सकता है कि दोनों देशों के मध्य आपसी व्यापारिक विकास की उन्नति हेतु नए मार्ग खुलेंगे तथा सम्बन्धों में आर्थिक घनिष्ठता के उपरान्त भारत बांग्लादेश के मध्य सम्बन्ध प्रगट हो सकेंगे।

Yadav (2018) - प्रस्तुत लेख के अन्तर्गत लेखक द्वारा भारत व बांगलादेश सम्बन्धों के विभिन्न कालों जैसे प्रमोद काल, उतार–चढ़ाव तथा नई शुरूआत के समय का विस्तार पूर्ण वर्णन किया गया है। लेखक के अनुसार भारत–बांगलादेश के मध्य ऐतिहासिक समय के विवाद–चकमा शरणार्थी समस्या, अवैध घुसपैठ, जल नदी विवाद तथा दोनों देशों के आपसी समझौते गंगा जल, नदी जल समझौता फरक्का जल बंटवारा तथा यातायात मार्गों का स्पष्ट वर्णन किया गया है। अन्त में कहा जा सकता है कि भारत व बांग्लादेश सम्बन्ध भविष्य में उच्च स़्तरीय तभी प्राप्त कर सकते हैं जब दोनों देशों द्विपक्षीय, क्षेत्रीय एवं विश्व शान्ति के लिए उच्च विचार तथा राजनीतिक नेतृत्व द्वारा विवेकपूर्ण नीतियों का आरम्भ किया जाए जिसमें भविष्य में दोनों के मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध सौन्दर्यपूर्ण हो सकेंगे।

Bhattacharyay (2019) – प्रस्तुत लेख के अन्तर्गत लेखक द्वारा भारत बांग्लादेश के मध्य द्विपक्षीय सम्बन्ध, आर्थिक संयोग तथा दक्षिण एशिया के राष्ट्रों के सहयोग के एकीकरण का विस्तृत वर्णन किया गया है। लेखक के अनुसार भारत व बांग्लादेश के मध्य आपसी व्यापार के परिणाम स्वरूप अर्थव्यवस्थाओं की वृद्धि हुयी है। भारत बांग्लादेश के आर्थिक सहयोग और एकीकरण एजेंड़ा को मजबूत बनाने विभिन्न अवसरों और समस्याओं पर वर्णन किया गया है। अतः कहा जा सकता है कि दक्षिण एशिया में वैश्विक

अर्थव्यवस्था के सफलातापूर्ण एकिकरण की वृद्धि में विकास तथा गरीबी को समाप्त करने के संदर्भ में लाभों को अधिकतम प्राप्त हेतु इस क्षेत्र को द्विपक्षीय सहयोग द्वारा मजबूत बनाने की आवश्यकता है। जिसके परिणाम स्वरूप दक्षिण एशियी देशों के सम्बन्ध सुदृढ़ होगे तथा इसके साथ भारत–बांग्लादेश के सम्बन्धों में सकारात्मकता उत्पन्न होगी।

lEL;k dFku &

भारत बांग्लादेश का सम्बन्ध ऐतिहासिक काल से ही अनिश्चित्ता पूर्ण रहे हैं। 1971 के उपरान्त (बांग्लादेश का विभाजन) से ही दोनों देशों के मध्य जल बँटवारा, चकमा शरणार्थी की समस्या, तस्करी की समस्या, अवैध नागरिकों की समस्या तथा अन्तः क्षेत्रीय विवाद जैसी समस्या उत्पन्न हुई है, जिसमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण समस्या नदी जल बँटवारे (तीस्ता नदी) को लेकर बनी हुई है, जिसका वर्तमान में कोई समाधान दृष्टिगोचर नहीं होता है। 50 वर्ष से दोनों देशो के सम्बन्धों को बांग्लादेश के राजनीतिक दल प्रभावित कर रहे हैं। बांग्लादेश की अवामी लीग पार्टी जो लोकतांत्रिक विचारधारा और धर्मनिरपेक्षता की विचार धारा में विश्वास करती है तथा बांग्लादेश नेस्नलिस्ट पार्टी के कट्टरवादी विचारधारा के कारण पार्टी का झुकाव चीन तथा पाकिस्तान की तरफ रहता है। अतः इन दो विरोधी विचारधाराओं के मतभेदों के कारण भारत तथा बांग्लादेश के सम्बन्धों में कटुता उत्पन्न हो रही है। दोनों देशों के समुचित विकास के लिए उन कारकों की खोज आवश्यक है जो दोनों देशों के मध्य राजनीतिक व आर्थिक विकास को प्रभावित करते हैं।

mìs'; &

1. भारत–बांग्लादेश के सम्बन्धों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. भारत–बांग्लादेश के मध्य राजनीतिक सम्बन्धों एवं विवादों का अध्ययन करना।
3. भारत–बांग्लादेश के मध्य आर्थिक सम्बन्धों के आधार पर सहयोग व अवसरों का अध्ययन करना।

ifjdYiuk &

1. भारत–बांग्लादेश के ऐतिहासिक सम्बन्ध मैत्री पूर्ण रहे हैं।

2. भारत–बांग्लादेश के राजनीतिक सम्बन्ध अनिश्चितता पूर्ण रहे हैं।

3. भारत–बांग्लादेश के मध्य आर्थिक सहयोग के आधार पर द्विपक्षीय सहयोग परिलक्षित होते हैं।

'kks/k i)fr

'kks/k fof/k & प्रस्तुत शोध वर्णात्मक तथा विश्लेषणात्मक शोध विधि पर आधारित है।

rF; ladyu L=ksr& प्रस्तुत शोध द्वितीयक स्त्रोतों पर आधारित है जिसमें पुस्तकों, पत्रिकाओं, सरकारी दस्तावेजों तथा इन्टरनेट बेवसाइट और अप्रकाशित दस्तावेजों आदि तथ्यों के संकलन हेतु द्वितीयक स्त्रोत के रूप में प्रयोग किया जायेगा।

'kks/k vUrjky &

1 भारत बांग्लादेश सम्बन्ध से सम्बन्धित शोधकार्यों में अब तक भारत बांग्लादेश के ऐतिहासिक सम्बन्ध, शीतयुद्ध के उपरान्त सम्बन्ध, बांग्लादेश व भारत के पश्चिम बंगाल से सम्बन्धित जटिल राजनीतिक तन्त्र, भारत बांग्लादेश व पाकिस्तान त्रिकोणीय सम्बन्ध तथा दक्षिण ऐशिया के परिपेक्ष में भारत बांग्लादेश सम्बन्धों के अध्ययन किये जा चुके हैं, जब कि भारत व बांग्लादेश के मध्य आर्थिक व राजनीतिक सम्बन्धों के अध्ययन में विस्तृत अध्ययन का अभाव है।

2 अब तक किये गये शोध कार्य में भारत बांग्लादेश सम्बन्धों को विभिन्न समय अन्तराल व कार्यकाल के सन्दर्भ में शोध कार्य किये गये हैं किन्तु प्रस्तुत शोध में वर्ष 2014 से भारत बांग्लादेश के सम्बन्धों को राजनीतिक व आर्थिक सम्बन्धों के आधार पर अध्ययन किया जायेगा।

v/;;u dk egÙo &

भारत व बांग्लादेश दक्षिण एशिया के पड़ोसी राज्य हैं जो अपनी सीमाओं, संस्कृति, भाषा आदि को साझा करते है। भारत की सुरक्षा हेतु पड़ोसी राज्यों के मध्य मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का होना महत्त्वपूर्ण है। दोनों राज्यों के मध्य कुछ ऐसे विवाद है जो सम्बन्धों को कमजोर कर रहें हैं जैसे तीस्ता विवाद, घुसपैठ इत्यादि के कारण दोनों देशों के सम्बन्धों पर प्रभाव पड़ा है। प्रस्तुत शोध में भारत बांग्लादेश के मध्य सम्बन्धों को आर्थिक व राजनीतिक आधार पर विश्लेषित करने का प्रयास किया है। नरेन्द्र मोदी के शासन काल के नये राजनीतिक व आर्थिक सम्बन्धों को उजागर करने का प्रयास किया गया है जिसमें

दोनों देशों के मध्य नये राजनीतिक सहयोग सम्बन्धी गतिविधियाँ तथा आर्थिक सम्बन्धों के उचार–चढ़ाव का विश्लेषण किया जायेगा तथा नरेन्द्र मोदी की ''पड़ोसी मैत्री नीति'' पर भारत बांग्लादेश सम्बन्धों के प्रति दृष्टिकोण को उजागर करने का प्रयास किया जायेगा। यह शोध दोनों देशों के परस्पर विकास के लिए राजनीतिक व आर्थिक सम्बन्धों को मजबूत करने के क्षेत्र में उन सुझावों को देने का प्रयास करेगा जो दोनों देशों के सम्बन्धों के सकारात्मक विकास के लिए महत्त्वपूर्ण होगें। प्रस्तुत शोध मेरे अनुसंधान के परिणामों का लाभ अनुसंधानकर्ताओं तथा नीति निर्माताओं के लिए भविष्य में सहायक हो सकता है।

iLrkfor v/;k; &

1 प्रस्तावना

2 भारत–बांग्लादेश सम्बन्धों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।

3 भारत–बांग्लादेश के मध्य राजनीतिक सम्बन्ध एवं विवाद।

4 भारत–बांग्लादेश के मध्य आर्थिक सम्बन्ध।

5 सुझाव एवं निष्कर्ष

l UnHk l ph

- Jain, P.C. (2014): Bharat ki Videsh niti, Atlantic, Publisher; New Delhi pp. 124-142
- Bhagal. P.S. (2016): Pradhan Mantri Narendra Modi Ki Videsh Niti, Caterpillar, Publisher,New delhi pp. 98-101
- Farooq. Sabhah (Id), Countering Terasism in Bangladesh, Dhaka
- Pant, P. (2015): Bharat Ki Videsh Niti, Rlldcrcray Publication, New Delhi, pp. 2.63-2.72
- Yadav, R.S. (2015): Bharat Ki Videsh Niti, Pearson Published, New Delhi, pp. 218-227
- Jayapalan, N. (2011): Foreign Policy of India, Atlantica Publishers, New Delhi .pp. 311-363
- Baylis, John et al. (2008): The Calabalization of world Politics An Introduction to interalional relations, Oxford, New York, pp. 96
- Gople, K.K. (2009): Indian International Relations Valam, Vol. 2, Atlantic Publication, p. 557-678
- Mani, S.D. and Chandra, V. (2015): Asian Strategic Neven, Idsa. Published, New Delhi
- Veuis, D. (2012): Bangaladesh: Politics, Economy and Civil Society, Cambridge University Press.
- Mudtond, M. et al. (2002): Bangladesh: Economic and Social Challenges of Globalisation University Press Ltd, New Delhi.
- Chouhan, K. and Karwar. K. (2012): Foreign Policy of Bangladesh, Kveri Book Published, New delhi. Mohan, R.C. (2015): Modi world: Expanding Indian sphere of Injliece, harpercollins. publishrs.india, pp46-48
- Jouhari, C. J. (2011): Antrastriy sambndh tatha rajniti, New Delhi, sterling. publishers, p174
- Hala, B.A. (2014): India-Bangladesh Relationns, New Delhi, Third concept. Vol.28,
- Sriwastva, M.(2016):, India-Bangladesh relations :An Enduring Economic partnership, Entrnationl, publishrd
- Banrjee, s. et al. (2017): The 2015 India-Bangladesh lond Boundary Agreement :Possibilitied in Cooch Behar, orf occasional paper, observer Research Foundation, publisrsh
- Dubey, M. (2016): Indias Foreign policy, orient Blackwan. Published, New Delhi, pp.123-160

- Datta, Parul (2010) : India-Bangladesh Relations: issue, Problems and Recent Developments, Safdarjung Enclave, New Delhi.-110029
- Balaji, M.S. (2017): India_Bangladesh Relations: An Endwing Economic Partnership: Occasianal paper, Vivekananda. International Foundation.
- Orfanline_org/wp_contnt/uploads/2017/07/ORF_Occasianal_peper_117_Landboundary. Pdf
- https://mea.gov.in/press_releases_hihtm/dtt/03/01/5
- https://mea.gov.in/partal/Foreign.Relation/India_Bangladesh_Bilateral_Brief_dec.2014
- Slieresources.worldbank.arg/Int Bangladesh/resources/rods.Pdf. (2006)
- https://www.resear.hellpublication/308880270_enviriaming_the_pature_of_cooperation_an_comman_rivers_in_south_Asia_coopcrative_security_opprouch_by_Bangladesh_and_India_to_the_Tipaimakh_Dam.
- https://www.researchgute_net/publication/224466875_Deepening_India-Aaaoe Bangladesh Economic_Cooperation_Challenges_and_opportunities.
- https://www.researgate.nat/publication/239809828
- https://www.Net.Reseurchget.Pahisation/265403973_Bangladesh_Foreign_Policy_towards_India_365_Internal_political_Dynamics_and_Bangladesh_Foreign_Policy_Towards_India.